Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

# AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE- IV Apr. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

# तुलसी के श्रीरामचरित मानस में नैतिक शिक्षा

**प्रा. डॉ. लीला कर्वा**
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

गोस्वामी श्री तुलसीदासजी का श्रीरामचरित मानस नीति शिक्षा का सर्वोत्तम ग्रंथ है। इसका शुभारंभ करते समय श्री तुलसीदासजी ने जहाँ श्री सरस्वतीजी, श्री गणेशजी, श्री पार्वतीजी, श्री शंकरजी आदि देवताओं की वंदना की है, वहीं वे दुष्टजनों को भी हाथ जोड़कर प्रेमपूर्वक विनय करने में नहीं चुके हैं । वे जानते हैं कि संतों का न कोई मित्र है और न कोई शत्रु, इसलिये वे दोनों का ही समान रुप से कल्याण करते हैं । किंतु दुष्टों की यह रीति है कि वे उदासीन, शत्रु अथवा मित्र किसी का भी हित सुनकर जलते हैं । यह जानकर दोनो हाथ जोड़कर यह जन प्रेमपूर्वक उनसे विनय करता है -

**उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति ।**
**जानि पानि जुग जोरि जन बिनती करइ सप्रीति ।।**

संगति के बारे में वे कहते हैं कि बुरे संग से हानि और अच्छे संग से लाभ होता है । जैसे पवन के संग से धूल आकाश पर चढ़ जाती है, और वही नीच (नीचे की ओर बहनेवाला) जल के संग से कीचड़ में मिल जाती है । साधु के घर के तोता-मैना राम-राम का सुमिरन करते हैं और असाधु के घर के तोता-मैना गिन-गिनकर गालियाँ देते हैं ।

**गगन चढ़इ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीच जल संगा ।।**
**साधु असाधु सदन सुक सारी । सुमिरहिं राम देहिं गनि गारी ।।**

सतीजी के पिता दक्षने यज्ञ किया, उन्होंने सबको निमन्त्रित किया, किंतु अपनी पुत्री सतीजी तथा जमाता शिवजी को निमंत्रित नहीं किया । जब सतीजी को यज्ञ के बारे में पता चला तो उन्होंने शिवजी से यज्ञ में जाने की आज्ञा माँगी । शिवजी उन्हें समझाते हैं -

**जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा, जाइअ बिनु बोलेहुँ न संदेहा ।**
**तदपि विरोध मान जहँ कोई, तहाँ गए कल्यानु न होई ।।**

यद्यपि इसमें संदेह नहीं है कि मित्र, स्वामी, पिता और गुरु के घर बिना बुलाये भी जाना चाहिये तो भी जहाँ कोई विरोध मानता हो उसके घर जाने से कल्याण नहीं होता । सतीजी गयी और इसका क्या परिणाम हुआ यह सर्वविदित है ।

शत्रु को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिये, उसके छल प्रपंच तथा उसकी मीठी -मीठी बातों से सदा सावधान रहना चाहिये । राजा प्रतापभानु कालकेतु राक्षस के छल-प्रपंच को नहीं समझ सके । इस विषय में श्री तुलसीदासजी कहते हैं -

**रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु ।**
**अजहुँ देत दुःख रवि ससिहि अबसेवित राहु ।।**

तेजस्वी शत्रु अकेला भी हो तो उसे छोटा नहीं समझना चाहिये । जिस राहु का मात्र सिर बचा था, वह राहु आज तक सूर्य-चन्द्रमा को दुःख देता है ।

स्वार्थपरायण नीच व्यक्ति की नम्रता भी बड़ी घातक और डरावनी होती है । दुष्ट रावण जब मारीच के पास जाते हैं और उसने सिर नवाया तब भगवान शंकर कहते है -

**नवनि नीच कै अति दुखदाई, जिमि अंकुस धनु उरस बिलाई ।**
**भयदायक खल कै प्रिय बानी, जिमि अकाल के कुसुम भवानी ।।**

नीच का झुकना (नम्रता) भी अत्यन्त दुःखदायी होता है । जैसे अंकुश, धनुष, साँप और बिल्ली का झुकना । हे भवानी! दुष्ट की मीठी वाणी भी उसी प्रकार भय देनेवाली होती है, जैसे बिना ऋतु के फूल.

तुलसीदासजी कहते हैं पुराण और वेदों में भी यही बात स्पष्ट की है की प्रत्येक मनुष्य में अच्छी और खोटी बुध्दि दोनो होती हैं -

**सुमति कुमति सब कें डर रहही,**
**नाथ पुरान निगम अस कहहीं ।**
**जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना,**
**जहाँ कुमति तहँ विपत्ती निदाना ।**

पुराण और वेद ऐसा कहते हैं कि अच्छी और खोटी बुध्दि सबके हदय में रहती है, जहाँ सुबुध्दि है वहाँ नाना प्रकार की सम्पदाएँ (सुख की स्थिति) रहती है और जहाँ कुबुध्दि है वहाँ परिणाम में विपत्ति रहती है ।

श्रीराम की बिनती के बावजूद जब समुद्र ने उनकी बात नहीं मानी तब श्रीरामजी क्रोध करके बोले - बिना भय के प्रीति नहीं होती.

**लछिमन बाण सरासन आनु, सोपाँ बारिधि बिसिख कुसानु**
**सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती, सहज कृपण सम सुंदर नीती ।**
**ममता रत सन ग्यान कहानी, अति लोभी सन बिरति बखानी ।**
**क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा, उसर बीज बएँ फल जथा ।**

श्रीरामजी कहते हैं - हे लक्ष्मण, धनुष्य-बाण लाओ, मैं अग्निबाण से समुद्र सोख डालुँ । (क्योंकि) मूर्ख से विनय, कुटिल के साथ प्रीति, स्वाभाविक ही कंजूस से सुन्दर नीति (उदारता का उपदेस), ममता में फँसे हुए मनुष्य से ज्ञान की कथा अत्यन्त लोभी से वैराग्य का वर्णन, क्रोधी से शम (शान्ति) की बात और कामी से भगवान की कथा कहना - इन सबका वैसा ही फल होता है जैसा ऊसर भूमि में बीज बोने से होता है ।

**जेहि ते नीच बड़ाई पावा, सौ प्रथमहिं हति ताहि असावा**
**धूय अनल संभव सुनु भाई, तेहि बुझाव धन पदवी पाई**

नीच मनुष्य जिससे बड़ाई पाता है, वह सबसे पहले उसी को मारकर उसीका नाश करता है । हे भाई, सुनिये आग से उत्पन्न हुआ धुआँ मेघ की पदवी पाकर उसी अग्नि को बुझा देता है -

**सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नहिं करहिं अधम कर संगा**
**कवि कोविद गावहिं असि नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीति**

हे पक्षिराज गरुडजी ! सुनिये यह बात समझकर बुध्दिमान लोग अधम (नीच) का संग नहीं करते । कवि और पंडित ऐसी नीति कहते हैं कि दुष्ट से न कलह ही अच्छा है न प्रेम.

इस समाज में कई लोग दूसरों को उपदेश देने में कुशल होते हैं । ऐसे कोरे उपदेशकों पर गोस्वामीजी ने मीठा व्यंग किया है ।

**पर उपदेस कुसल बहुतेरे । जे आचरहिं ते नर न घणेरे**
**तुलसी इस संसार का सबसे बड़ा धर्म कौनसा है यह स्पष्ट करते हैं ।**
**पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई**
**निर्णय सकल पुरान वेद कर, कहैऊँ तात जानहिं कोविद नर**

दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को दुःख पहुँचाने के समान कोई नीचता नहीं है । समस्त पुराणों और वेदां का यह सिध्दान्त है ।

इस प्रकार आचार्य तुलसी ने वेद पुराणों का प्रमाण देते हुए नीति की शिक्षा दी है ।